ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-2* May- 2021
Anthology : The Research

नक्सलवाद–आतंक या आंदोलन

Naxalism - Terror or Movement

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 25/07/2021

नीतू चौधरी
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
टोंक, राजस्थान, भारत

सारांश

आंतरिक सुरक्षा का सवाल भारत के लिए नया नहीं है। इतिहास में झांक कर देखेंगे तो पाऐंगे कि आजादी के बाद से ही देश के विभिन्न हिस्से हिंसक आंदोलनों से लहुलूहान होने लगे थे। चाहे पूर्वोत्तर हो या दक्षिण भारत, कश्मीर हो आंध्रप्रदेश या छत्तीसगढ़ सब जगह हिंसा और आतंकी पाठशाला चल रही है।

ऐसे समय में जबकि संपूर्ण विश्व कोरोना वायरस से जूझ रहा है। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों का सुरक्षा बलों पर बड़ा हमला चिंता का विषय बन गया है, जिसमें अब तक 22 जवान शहीद हुए हैं, वहीं कुछ जवान लापता भी है। इस नक्सल अटैक के बाद हड़कंप मच गया है।

1967 में पश्चिमी बंगाल में दार्जिलिंग जिले के नक्सलवाड़ी गांव से इस आंदोलन की शुरूआत हुई। चीन के कम्यूनिस्ट नेता माओत्से तुंग की नीतियों से प्रभावित इस आंदोलन को माओवाद भी कहा जाता है। समाज का एक वर्ग नक्सलवाद को आतंकवाद से जोड़कर देखता है और भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए इसे गंभीर खतरा मानता है। वहीं दूसरा वर्ग इसे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विषमता से उत्पन्न समस्या के रूप में स्वीकार करता है। कुछ लोग इसे कानूनी समस्या के रूप में स्वीकार करते हैं।

नक्सलवाद, जिसकी शुरूआत एक आंदोलन के रूप में हुई, वर्तमान में एक भयंकर समस्या का रूप धारण कर लिया है।

The question of internal security is not new to India. If you look into the history, you will find that after independence, different parts of the country started bleeding due to violent movements. Whether it is Northeast or South India, Kashmir, Andhra Pradesh or Chhattisgarh, violence and terrorist schools are going on everywhere.

At a time when the whole world is battling the corona virus. In Chhattisgarh's Bijapur, a major attack by Naxalites on security forces has become a matter of concern, in which 22 soldiers have been martyred so far, while some soldiers are also missing. There has been a stir after this Naxal attack.

This movement started in 1967 from Naxalbari village of Darjeeling district in West Bengal. Influenced by the policies of Chinese Communist leader Mao Zedong, this movement is also called Maoism. A section of the society associates Naxalism with terrorism and considers it a serious threat to the internal security of India. On the other hand, the second class accepts it as a problem arising out of social, economic and political inequality. Some people accept it as a legal problem.

Naxalism, which started as a movement, has now become a serious problem.

मुख्य शब्द : वामपंथी, माओवाद, शहरी नक्सलवाद।
Left Wing, Maoism, Urban Naxalism.

प्रस्तावना

1967 में पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलवाड़ी गांव में किसानों ने भूमि के अधिकार को लेकर विद्रोह किया। यह उपेक्षित ग्रामीणों द्वारा अपने सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु सशस्त्र संघर्ष था जिसे चारू मजूमदार, कान सान्याल, जंगल संथाल जैसे नेताओं ने बढ़ावा दिया, ये सामाजिक न्याय हेतु हिंसक क्रांति के समर्थक थे। पश्चिम बंगाल सरकार ने इसे कानून व्यवस्था की समस्या मानकर पुलिस कार्यवाही से दबाने का प्रयास किया जिसके परिणामस्वरूप बंगाल में इसका प्रभाव कम हुआ, लेकिन यह आंध्रप्रदेश एवं बिहार जैसे अन्य क्षेत्रों में फैल गया। सरकार द्वारा इससे निपटने की खामियों तथा

मध्य एवं पूर्वी भारत में गरीबी, अल्प विकास, विस्थापन, उत्पीड़न आदि के कारण नक्सलवादी आंदोलन का दायरा देश के अन्य भागों में बढ़ता चला गया।[1]

आदिवासियों के इस संघर्ष में विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं में कार्यरत संगठनों का भी योगदान रहा है। जननाट्टय मंच, जन संस्कृति मंच, भारतीय जननाट्य संघ, जनवादी लेखक संघ, संस्कृति कर्मी, तमाम फिल्मी हस्तियाँ अपने लेखन और सिनेमा द्वारा इस संघर्ष को समर्थन देती रही है। विभिन्न साहित्यकार जैसे मुक्तिबोध, नागार्जुन, त्रिलोचन धूमिल, गोरख पांडेय, ख्याति प्राप्त साहित्यकार महाश्वेता देवी, पंजाबी कवि स्व. पाश सहित भारत की प्रत्येक भाषा में नक्सली साहित्य ने अपनी गहरी पैठ बनायी है।[2]

शुरूआत में, भारत का वामपंथी आंदोलन चीन के माओवाद से प्रभावित है। माओवादी हिंसा और ताकत के बल पर अपनी बात मनवाना चाहते हैं और अपने मकसद को पाने के लिए हर प्रकार की हिंसा को जायज ठहराते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

नक्सलवाद जिसकी शुरुआत 1967 मे एक आंदोलन के रूप मे हुई थी, इसने आज एक भयानक रूप धारण कर लिया है। वर्तमान समय मे भारत अनेक प्रकार की समस्याओ से गुजर रहा हैलेकिन आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से नक्सलवाद बहुत बड़ी समस्या है । प्रस्तुत पेपर का उद्देश्य इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

आतंकवाद

आतंकवादी अपने स्वार्थसिद्ध और राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर प्रकार की शक्ति तथा अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग करने में विश्वास रखते हैं। शस्त्रों का ऐसा घृणित प्रयोग प्रायः विरोधी वर्ग, समुदाय, सम्प्रदाय अथवा राष्ट्र विशेष को गैर–कानूनी ढंग से डराने, धमकाने, जान से मार देने, हिंसा के माध्यम से सरकार गिराने तथा शासन तंत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उद्देश्य से किया जाता है। इस प्रकार आतंकवाद उस प्रवृत्ति को कहा जाता है जिसके माध्यम से कतिपय अवांछित तव अपनी मांगे मनवाने के लिए अनेक प्रकार के जघन्य हिंसात्मक उपाय एवं अमानवीय साधनों एवं अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग करते हैं।[3]

नक्सलवाद और आतंकवाद में अब बहुत कम अंतर रह गया है

रोज–रोज की अराजकता, हत्याओं और अपहरण को देखकर लग रहा है नक्सलवादी अपनी सीमाओं को पार करते जा रहे हैं। दरअसल राजनीति की अति राष्ट्रनीति को हमेशा प्रभावित करती है और यही नक्सलवाद और आतंकवाद के साथ हो रहा है। नक्सलवाद के बारे में हमारे नेताओं का तर्क है कि ये तो हमारे ही लोग हैं, इसलिए कठोर बल या कानून के प्रयोग से इनको काबू करना ठीक नहीं है और हुआ ये कि आज यह समस्या भयानक रूप से हमारे सामने है।

आज नक्सलवाद, माओवाद का रूप ले चुका है, विदेशों से खास तौर से पड़ौसी देशों से उनको आर्थिक और सामरिक प्रोत्साहन मिलने के प्रमाण मिल चुके हैं, अत्याधुनिक हथियार जैसे रॉकेट लांचर का थोक में निर्माण हो रहा है। सेटेलाइट फोन उनका संचार माध्यम है।

आज हालात ये है कि पिछड़ेपन का रोना रोने वाले नक्सलीद अपने कब्जे वाले क्षेत्रों में विकास होने ही नहीं देते। कितनी घटनाऐं घटित हुई है जब प्रभावित गांवों में स्कूल या पोस्ट ऑफिस खोलने गए सरकारी कर्मचारियों को उन्होंने या तो मार डाला या उनको वहां से डरा धमका कर भग दिया गया और ऐसा लगता है कि अब ये उनकी सत्ता की लड़ाई है न किसी किसी हक की या किसी शोषण के खिलाफ।[4]

भूमि सुधार के उद्देश्य को लेकर शुरू हुआ नक्सली आंदोलन आज सत्ता प्राप्ति का माध्यम बन गया है। यह बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति का संकेत है। आंदोलन शिकायत से लालच की तरफ हस्तांतरित हो रहा है। जाति एवं नृजातीय पहचान अब विचारधारा का स्थान ले चुकी है। जमींदारों और वन अधिकारियों का विरोध कर गरीब किसानों एवं आदिवासियों के हितों की रक्षा के स्थान पर अब वसूली, उगाही, अपहरण कर फिरौती मांगना जैसे कार्य किये जाने लगे हैं।[5]

शहरी नक्सलवाद

पिछले कुछ साल में शहरी नक्सलवाद या अर्बन नक्सलिज्म शब्द बड़ी तेजी से सामने आया है। शहरी नक्सलवाद से मतलब, उन शहरी आबादी में रहने वाले लोगों से है जो प्रत्यक्ष तौर पर तो नक्सलवादी नहीं है, लेकिन वो नक्सलवादी संगठनों के प्रति और उनकी गतिविधियों के प्रति सहानुभूति रखते हैं। शहरी नक्सलवाद हमारे देश के युवाओं को ही देश के खिलाफ भड़का रहा है।

भारत में वामपंथी जातिवाद 60 के दशक में अपने जन्म के साथ ही ज्यादातर गाँवों में सीमित रहा और विशेष तौर पर अच्छे पढ़े–लिखे रोमांटिक और स्वप्न दृष्टा लोगों पर इसका प्रभाव रहा। मिसाल के तौर पर चारू मजूमदार और कानू सान्याल जो कि 1967 में नक्सलबाड़ी आंदोलन के कार्यधर्ता थे, वो सम्पन्न परिवारों और गैर ग्रामीण पृष्ठभूमि के थे। जहाँ एक ओर चारू मजूमदार एक धनाढ्य बंगाली परिवार से आते थे वहीं कानू सान्याल तक उच्चवर्ण बंगाली शरणार्थी थे, जिन्होंने अपना ज्यादातर वक्त शहरों में बिताया था। मौजूदा कई नेता जैसे सांकेत राजन, रवि वर्मा, मुप्पला लक्ष्मण राव, कोबाद गांधी गणपति, अनुराधी गाँधी भी शहरों से ताल्लुक रखते हैं और अपने सम्पन्न सम्पन्न और सुविधायुक्त जीवन को छोड़कर वैचारिक प्रतिबद्धता के चलते गरीबों और शोषित लोगों के संघर्ष में शामिल हुए हैं।[6]

इतिहास इस बात का सदैव साक्षी रहा है कि कोई क्रांति एक दिन का परिणाम नहीं होती, क्योंकि किसी भी क्रांति की जड़ में एक मनोवैज्ञानिक विचारधारा की क्रांति जन्म लेती है और यही क्रांति धीरे धीरे अहिंसा से हिंसा के मार्ग की ओर अग्रसर होने लगती है और जब जब शोषण व अत्याचार अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँचा, एक क्रांति ने जन्म लिया। जिन लोगों को अपने खेत खलिहान में हल जोतने की आवश्यकता थी, जिन मासूमों को

बचपन में किताब व कलम की जरूरत थी, जिन महिलाओं को शिक्षित होने व अपने को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में सशक्तिकरण की आवश्यकता थी, उन सभी ने सामूहिक रूप से हथियार उठा लिये और हिंसा के मार्ग पर चल पड़े अपनी मंजिल को तलाशने। इस तरह उन्होंने उन मुठ्ठीभर, अमीर, जमींदार, पूंजीपति, सूदखोर, गरीबों आदि के विरूद्ध सशस्त्र विद्रोह का शंखनाद कर दिया।

दरअसल यह आंदोलन जिसकी शुरूआत विषमता और अन्याय के खिलाफ हुई इसने आज एक भयंकर समस्या का रूप धारण कर लिया है। नक्सली समस्या को आरंभ में असमानता, अन्याय, शोषण, विकासहीनता, गरीबी आदि के परिप्रेक्ष्य में देखा गया। इस दृष्टि से भारतीय जनमानस के एक विशाल समूह की सहानुभूति व नैतिक समर्थन इन्हें मिलता रहा है। लेकिन बाद में कुछ ऐसी धटनाएँ घटी जिससे नक्सलवाद को आतंकवाद से भी खतरनाक एवं देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे के रूप में रेखांकित किया है। नक्सलवादियों की लड़ाई अब दबे कुचले आदिवासियों की नहीं रह गई है, इसका उद्देश्य नक्सलवाद की आड़ में अराजकता फैलाना है।

आंदोलन का भविष्य

केन्द्र और राज्य सरकार के बीच की खींचतानी और ढुलमुल रवैये के कारण नक्सलवाद निरंतर बढ़ रहा है। इस आंदोलन ने भारतीय समाज व राजनीति के प्रत्यक क्षेत्र पर अपना प्रभाव छोड़ा है। सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखें तो नक्सलवादियों ने जमींदारों से भूमि छीनकर इसे गरीों में वितरित किया। बिहार जैसे राज्यों में किसानों को संगठित किया व राज्यों में निम्न जातियों के प्रति किये जाने वाले अत्याचार व शोषण में कमी हुई है। नक्सली आंदोलन ने पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने में महिलाओं की सहयोगिता को बढ़ावा दिया है।

नक्सलवाद का जन्म जिन उद्देश्यों को लेकर हुआ था उसमें सत्ता भूख एवं स्वार्थपूर्ति के कारण परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। जिन उद्देश्यों को लेकर आंदोलन की शुरूआत की गई, उसमें आज भटकाव नजर आ रहा है। आदिवासियों के हितों के लिए शुरू किया गया आंदोलन आज अपने रास्ते से दूर जा रहा है। स्थानीय लोगों का सहयोग और समर्थन भी अब उन्हें प्राप्त नहीं है अगर प्राप्त है तो केवल दबाव और डर के कारण। नक्सलियों के द्वारा स्थानीय आदिवासियों पर ही अत्याचार किये जा रहे हैं जिसके कारण आदिवासी अब नक्सलवादियों का साथ नहीं दे रहे हैं। यहां तक कि महिलाओं और बच्चों पर भी ये अत्याचार कर रहे हैं।

आंदोलन का उद्देश्य हिंसा फैलाना नहीं था बल्कि अपनी बात सरकार तक पहुँचाने के लिए जन आंदोलन करना था, किन्तु वर्तमान में यह आंदोलन पूरी तरह हिंसक हो चुका है, अपना रास्ता भटक चुका है। आंदोलन के भविष्य पर कह सकते हैं कि हिंसा जारी रहेगी क्योंकि हमने नक्सली समस्या के कारणों को नहीं समझा है। यदि हम समझ भी गये तो इनका समाधान नहीं चाहते या यूं कहे शायद हमारे पास इसके लिए संवेदना और राजनैतिक इच्छा शक्ति नहीं है।

देश के वर्तमान सामाजिक और आर्थिक ढाँचे से पूँजीपति वर्ग के लिए जुड़े हुए हैं, इसलिए यह ढाँचा बदलता हुआ नहीं दिखता, जिससे आंदोलन भविष्य में भी जारी रहेगा।

नक्सली आंदोलन का भविष्य माओवादी नेतृत्व पर भी निर्भर करेगा। वर्तमान में यह आंदोलन विचारधारा की अपेक्षा हिंसा से अधिक संचालित हो रहा है। माओवादी पार्टी में वैचारिक टकराव बढ़ रहा है। माओवादियों के प्रति जनसमर्थन घटता जा रहा है। पार्टी छोड़ने वाले और आत्मसमर्पण करने वालों की तादाद बढ़ती जा रही है। माओवादी आंदोलन निकट भविष्य में समाप्त होता नहीं दिखता है। आंदोलन की दशा एवं दिशा क्या होगी यह सरकार और माओवादियों के प्रयासों और रणनीति पर निर्भर करेगा।

निष्कर्ष

नक्सलवाद को आंदोलन के रूप में स्वीकार करे या समस्या के रूप मे इसका निदान अत्यंत आवश्यक है। अब स्थानीय लोगो का भी समर्थन इसे प्राप्त नही है।आंतरिक सुरक्षा के लिए यह भयंकर चुनौती के रूप मे उभर कर सामने आया है।आंदोलन का भविष्य भी अधर मे हैं, ना इसका कोई नेतृत्व रहा है और ना ही उद्देश्य।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कौर, सरबजीत, टूवर्ड अंडरस्टैडिंग नक्सलिज्म, मैनस्ट्रीम, वॉल्युम XLVIII, 13 मार्च 2010*
2. *M.Jagran.Com*
3. *डॉ. सिंह आर.बी., भारत में आतंकवाद, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2010*
4. *https://readerblogs.novbharattimes.indiatimes.com*
5. *तेज प्रताप सिंह, फ्रॉम ग्रिविंस टू ग्रीड, द हिन्दू, 2 मार्च 2013*
6. *https://www.orfonline.org*